DOI-10.53571/NJESR.2020.2.1.53-62

समकालीन भारतीय चित्रकला में साहित्यिक अभिव्यक्ति

डॉ. शंकर शर्मा
सहायक आचार्य, चित्रकला
से.म.बि राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
नाथद्वारा

(Received:20December2019/Revised:12January2020/Accepted:20January2020/Published:25January2020)

सारांश :– कला मूलतः अभिव्यक्ति है। यह अभिव्यक्ति हे विचारों की, विचार जब शब्दों का रूप लेकर अभिव्यक्त होते हैं तो कविता का जन्म होता है और जब विचार रंगों के माध्यम से दृश्य रूप लेते हैं तो चित्र बनता है ।साहित्य और कला का यह अंतर संबंध सदियों से दृष्टव्य है । समकालीन भारतीय चित्रकला एवं साहित्य में भी यह संबंध आवश्यक रूप से दिखाई देता है। प्रस्तुत लेख में ऐसे ही कुछ साहित्यकारों एवं चित्रकारों के कार्य को सम्मिलित कर कला एवं साहित्य के इस संबंध को पुष्ट करने का प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्द – अलौकिक – जो लोक मे न मिलता हो, अद्भूत, अर्पुव, रूझान– झुकाव, दिक् – काल – समय और अन्तराल

कलाएं अपने मूल में मानवीय विचारों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति है। फिर चाहे वह संगीत हो, चित्रकला हो, या अन्य कोई कला। इन सभी कलाओं के बीच एक अव्यक्त संबंध होता है जो इन्हें एक दूसरे से जोड़ता है, इसी तरह का संबंध कला एवं साहित्य में भी होता है क्योंकि इन दोनों में भी एक समान तत्व होता है। यह तत्व है संवेदना का, विचार का, इस संवेदना को विचार को जब शब्द मिलते हैं तो साहित्य का सृजन होता है, और जब रंगों और रेखाओं के द्वारा इसे व्यक्त किया जाता है तो चित्र बनता है। चित्र की विशेषता यह है कि उसमें मानस चित्रों को

रेखा और रंगों के द्वारा चाक्षुष चित्रों में प्रस्तुत करने का सामर्थ्य होता है वही साहित्य में, काव्य में, शब्दों द्वारा स्थान, दिक–काल और सबसे परे सुक्ष्मातिसुक्ष्म भाव को अभिव्यक्ति दी जाती है। इस अभिव्यक्ति में दो तत्व काम करते हैं, पहला नाद तत्व और दूसरा चित्र तत्व यह चित्र तत्व काव्य का प्राण है, जो कवि के अंतर को श्रोता के समक्ष साक्षात मूर्त रूप में प्रस्तुत कर देता है। शायद इसिलिए प्रसिद्ध कवि सियमानिड़स कहते है कि ''चित्रकारी निःशब्द कविता की तरह होती है और कविता एक बोलते हुए चित्र की तरह''[1]।

भारतीय परपंरा में चित्रकला एवं साहित्य का संबंध बहुत पुराना रहा है दोनों सदैव एक दूसरे को प्रेरित एवं प्रोत्साहित करते रहे हैं। वैदिक युग में जहां वेदों ने आकार निर्मिती की शास्त्रीय परपंरा का श्रीगणेश किया एवं वेदों में वर्णित देवी स्वरूपों के आधार पर मूर्तिशिल्पों का निर्माण शुरू हुआ, वही प्राचीन युग में कलाएं धर्मोपदेश हेतु उपलब्ध साहित्य का आधार लेकर आगे बढ़ी। अजंता की गुफाएं इसका श्रेष्ठ उदाहरण है। इसी प्रकार मध्य युग भी संगीत, साहित्य एवं चित्रकला की त्रिवेणी रहा। जहां तीनों ने साथ मिलकर अद्‌भुत अलौकिक रचनाओं की सृष्टि की इस तरह हर युग में चित्रकला एवं साहित्य का मधुर संबंध रहा है। इतना अवश्य है कि इसका स्वरूप सदा परिवर्तनशील रहा है। कालिदास, भास, वाणभट्ट एवं शुद्रक के समय में इस रिश्ते का जो स्वरूप दिखाई देता है वह आज के आधुनिक युग के साहित्यकारों निराला, महादेवी वर्मा, पंत, जयशंकर प्रसाद, अज्ञेय और शमशेर बहादुर सिंह के समय के रिश्ते से बहुत भिन्नता लिए हुए हैं।

साहित्य मनुष्य की अभिव्यक्ति के अत्यंत पुराने माध्यमों से एक है एवं प्रायः सभी कलाओं से इसका एक अंतसंबंध रहा है जिसे हर युग में कवियों कलाकारों

कथाकारों एवं उपन्यासकारों ने अपनी–अपनी तरह से परिभाषित एवं उद्घाटित किया है। कला एवं साहित्य में आदान–प्रदान की एक प्रक्रिया अनवरत चलती रही है, जिसमें कभी कलाओं ने साहित्य से कुछ सीखा तो कभी साहित्य इन से प्रभावित हुआ। इसमें भी कविता और चित्रकला के बीच परस्पर संबंधों की तो एक सुस्पष्ट परम्परा हमारे यहां रही है।

आधुनिक युग में भी कई कवियों एवं चित्रकारों ने चित्र एवं कविता की इस अतंर्संबंध को पहचाना एवं महसूस किया है। साथ ही अपने सृजन में उसको स्थान भी दिया है। महादेवी वर्मा, जगदीश गुप्त, शमशेर बहादुर सिंह आदि की रचनाएं इसका उत्तम उदाहरण है। प्रसिद्ध कवियत्री महादेवी वर्मा के काव्य संकलनो में अपने भाव चित्रों को रंग रेखाओं में उतारने का जो प्रयास है व स्पष्ट दिखाई देता है। जगदीश गुप्त, शमशेर बहादुर सिंह आदि कवियों की कविताओं में भी दोनों ही विधाओं का प्रभाव रहा है, शमशेर बहादुर सिंह अन्य कवियों की अपेक्षा चित्रकला से अधिक जुड़े रहे हैं। उन्होंने अपने काव्य संकलन 'कुछ कविताएं' में चित्रकला के प्रति उनकी रूचि को रेखांकनों के माध्यम से व्यक्त की है। कुछ कविताओं में उन्होंने चीनी चित्र लिपि का भी प्रयोग किया है। इसके अतिरिक्त लक्ष्मीकांत वर्मा, राजकुमार, विपिन अग्रवाल, चन्द्रंकांत देवताले आदि कई कवि कलाकार हैं जो अपनी रचनाओं में रंगों और रेखाओं का प्रयोग कर रहे हैं।

आधुनिक एवं समकालीन भारतीय चित्रकारों में कई चित्रकार ऐसे हैं जो साहित्य से भी जुड़े रहे हैं। अमृता शेरगिल, नंदलाल बोस और रविंद्र नाथ टैगोर जैसी विभूतियों ने तो चित्रकला एवं साहित्य दोनो ही क्षेत्रों में अपनी छाप छोड़ी है। समकालीन चित्रकारों में एम एफ हुसैन, फ्रांसिस न्यूटन सूजा, जे स्वामीनाथन,

रामकुमार, गुलाम मोहम्मद शेख, जय झरोटिया, राम गोपाल विजयवर्गीय, राम जैसवाल आदि प्रमुख है। इनमें से कुछ कलाकारों ने चित्र के साथ लेखन का कार्य किया है तो कुछ ने साहित्यिक रचनाओं के आधार पर चित्र निर्मिती की है।

प्रख्यात चित्रकार एस. एच. रजा विशुद्ध चित्रकार के रूप में अपनी पहचान रखते हैं। लेकिन काव्य के प्रति भी उनका सदैव एक स्वाभाविक रूझान रहा है जो उनके चित्रों में साफ दिखाई देता है। अक्सर कविताओं की पक्तियां एवं छंद उनके चित्रों में अकित दिखाई देते हैं। उन्होंने चित्रों में जो भी काव्य पंक्तियां अकित की है वह उनके भावार्थ चित्रों की मूल भावना को दर्शकों तक और अधिक सरलता के साथ संप्रेषित करती है। इसका उदाहरण 'बिन्दु' नामक चित्र श्रृंखला का वह चित्र है जिसमें कवि मुक्तिबोध की कविता की एक पंक्ति इस ''तम शून्य में तैरती है जगत समीक्षा''[2] अंकित की गई है। इसके द्वारा उन्होंने काले शून्य से जन्म लेकर रंगों के दीप्तिमान होते चले जाने के विचार को अभिव्यक्ति दी है।

समकालीन भारतीय कला के चर्चित हस्ताक्षर एम.एफ. हुसैन भी अपनी कला में संदर्भ के तौर पर साहित्य, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, स्थापत्य एवं रंगमंच सभी की उपस्थिति को सदैव सहर्ष स्वीकार करते थे। उनकी आत्मकथा में भी इन सभी कला रूपों की मौजूदगी स्पष्ट तौर पर दिखाई देती है। शायद यही कारण है कि दर्शक भी उनके चित्रों में कहानी, कविता, राग, संगीत, मुद्रा सभी की समिश्रित अनुभूति करते हैं। साहित्यिक विषय लिए उनके चित्रों–पिंजरे में पक्षी, चिराग, सूर्य चंन्द्रमा आदि में संस्कृत व उर्दू काव्य में निहित साहित्यिक बिम्बों का चित्रात्मक प्रस्तुतीकरण किया गया है। इनके साथ ही साहित्यिक प्रतीकों का प्रयोग भी उनके चित्रों में दिखाई देता है।

इस कड़ी में आगे रामकुमार का नाम आता है वे प्रसिद्ध चित्रकार तो है ही एक कहानीकार के रूप में भी उन्होंने अपनी पहचान बनाई है। अपनी कहानियों में प्रायः विषय के तौर पर उन्होंने शहरी मध्यम–वर्गीय परिवारों, बेरोजगारी से त्रस्त युवकों एवं बंजर शहरी जीवन से त्रस्त थकी हुई मानवीय कृतियों को पूर्ण संवेदनशीलता के साथ रूप व शब्द प्रदान किए हैं। ''उनकी कहानियों में बंद दुनिया और प्रकृति के सहज विस्तारों के प्रति एक विचित्र मोह रहा है''[3] 'सेलर सिमेट्री' आदि कहानियां इसके अच्छे उदाहरण हैं। उनके चित्र और कहानियां इस बात को पुष्ट करते हैं कि माध्यम की विभिन्नता कलाकार के मूल भावों की सवेदनशील अभिव्यक्ति में कभी बाधक नहीं बन सकती है।

रंगों एवं शब्दों के इसी माध्यम वैविध्य के साथ सृजित गुलाम मोहम्मद शेख की कृतियां तकनिकी एवं वैचारिक दृष्टि से भारतीय आत्मा लिए हुए हैं। उनके चित्र दर्शन में अद्‌भुत आनंद देते हैं। उनके चित्रों के रंगों की लय में कविता के समान आनंद की अनुभूति होती है। जैसे कि उनके चित्रों में फैले लाल रंग के विशाल परिदृश्य में हरे रंग के अद्‌भुत प्रयोग के साथ नीला रंग कब पेड़ बन जाता है और कब वह जंगल के हरे आलोक से उछलकर गायों की काया में नील–बैंगनी आभा के साथ उतर आता है पता ही नहीं चलता''[4]। एक कलाकार के तौर पर भी शेख कविता एवं चित्र को अलग–अलग नहीं मानते उनका मानना है कि कविता एवं चित्र को दो अलग–अलग क्षेत्रों में विभाजित नहीं करना चाहिए, वे कहते हैं कि यह कहना अजीब लगता है कि कविता का क्षेत्र अलग है और चित्रकला का अलग, यह तो वास्तव में अनुभूति का क्षेत्र है जो बहुत विशाल और उदार होता है, कविता कई क्षेत्रों में प्रवेश करती है। उसमें संगीत भी होता है, भले ही वह, जिसे संगीत कहा जाता है, उस तरह का ना हो। उसमें रंग भी होते हैं, भले ही वह कैनवास की तरह

ना हो। शेख साहब ने अपनी स्वलिखित रचनाओं के साथ कबीर की रचनाओं को भी चित्र रूप प्रदान किया है।

''यह जो सामने पहाड़ है

इसके पीछे एक और पहाड़ है

जो दिखाई नहीं देता

धार–धार चढ़ जाओ इसके ऊपर

राणा के कोर्ट तक

और वहां से पार झाँको

तो भी नहीं

कभी–कभी जैसे

यह पहाड़

धुंध में दुबक जाता है

और फिर चुपके से

अपनी जगह लौट कर ऐसे हो जाता है

मानो कहीं गया ही न हो .....''[5]

उपरोक्त कविता की तरह जगदीश स्वामीनाथन के चित्रों में भी प्रायः पहाड़, नदी, हवा एवं चट्टान जैसे अभिप्राय दिखाई देते हैं। उनके चित्र अक्सर कविता के

समान एवं कविताएं चित्रों के समान अनुभूति करवाती है। ऊपर से सामान्य दिखाई देने वाली उनकी रचनाएं अपने भीतर असीम संवेगो को समेटे रहती है, जिसमें भौतिक जीवन के नियमों की अपेक्षा होते हुए भी घोर यथार्थवादिता होती है। हवा में अटकी चट्टान, जिसकी चोटी पर फड़फड़ाती चिड़िया, झील में प्रतिबिम्बित पहाड़, जो आपको 'कौन क्या है' जानने के लिए छोड़ देता हैं, अक्सर दर्शक को अद्भुत कल्पना लोक में ले जाता है। इन्होंने दोनो ही विधाओं में पूर्ण अधिकार के साथ सृजन किया है। उनके बारे में ज्योतिष जोशी का कहना है कि ''स्वर्गीय जगदीश स्वामीनाथन का कलाकार जिस तरह प्रकृति में रमता है उसी तरह अपनी कविताओं में भी। उनकी कविताएं एक रूप में चित्राकृतियाँ ही है''[6]।

जय झरोटिया भी कला एवं साहित्य दोनों विधाओं में अपना दखल रखते हैं। ''वह एक ऐसे कल्पनाशील कलाकार हैं जो आदमी द्वारा आदमी के चेहरे को महसूस करते हुए, आदमी के हाथों में उसी का चेहरा थाम कर भागते हुए दिखा सकते हैं''[7]। उनके चित्रों की तरह कविताओं में भी इसी प्रकार की कल्पना शक्ति के दर्शन होते हैं जिसमें अति यथार्थवादी वातावरण, रहस्य एवं यथार्थवादी सी दिखने वाली घटना आदि सभी कुछ का मिश्रण रहता है। वह अपने चित्रों एवं कविताओं में बाहरी दुनिया के रूपा कारों से अंतर्मन पर पड़े प्रभावों को इतने सशक्त ढंग से व्यक्त करते हैं, मानो उनकी कृति हम से वार्तालाप कर रही हो। अभिव्यक्ति के लिए माध्यम की बाध्यता कभी भी उनके सामने नहीं रही उनका कहना है कि ''चाहे वह चित्रकला हो या कविता उसमें संवेदना का तत्व समान होता है। इस संवेदना को, विचार को और सोच को चाहे एक कवि शब्दों में ढालें या एक चित्रकार कागज या कैनवास पर उतारे उस में बहुत फर्क नहीं आता''[8] इन्होंने स्वनिर्मित एवं अन्य कवियों की कई कविताओं को चित्र रूप प्रदान किया है।

जिसमें सौमित्र मोहन की कविता 'लुकमान अली' पर आधारित चित्र श्रंखला आदि प्रमुख है।

राजस्थान की आधुनिक कला के चर्चित हस्ताक्षर कला गुरू राम गोपाल विजयवर्गीय ने अपने जीवन के 93 वर्ष कलारसमय में होकर व्यतीत किए। इन्होंने भी अपनी भावुकता और संवेदनशीलता को मात्र चित्र फलक तक ही सीमित नहीं रखा अपितु इनके अन्दर के विचारक और साहित्यकार ने रंग और रेखाओं के साथ अर्थपूर्ण शब्द और भावपूर्ण शब्दावलियों को भी अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया। जहां इन्होंने कादम्बरी, मेघदूत, गीत गोविंद, कुमारसंभवम्, रघुवंशम, रामायण, महाभारत, अमरू–शतक, अलिफ लैला के प्रसंगों और कथानकों को अपनी पैनी कल्पना तथा सशस्क्त तूलिका के द्वारा अपनी मौलिक कला शैली में चित्रित किया वहीं समानांतर साहित्य सर्जन भी किया। आपकी कहानियां, कविताएं, कला विषयक निबंध, अलकावली, चिंगारियां, शतवल, मेहंदी लगे हाथ, काजलभरी आंखे, चित्र गीतिका, वैदही विरह, सीता संदेश, पंचतंत्र की कहानियां, विमानदूत, मेघदूत, पद्यानुवाद आदि कृतिव में विघमान है।

''दिनभर जिंदगी के, जिंदगी में बदलते विकृत होते रंग और आकारों को पढ़ता हूं, कुछ को विवश चित्रित भी करता हूं। रात आती है..... सोने से पहले के या नींद के सपनों को प्रतीम और शब्द देती है तो लिखते को बाध्य होता हूं''[9] प्रसिद्ध चित्रकार राम जैसवाल के यह विचार दर्शाते हैं कि उन्होंने अपने जीवन में चित्र और साहित्य को समान महत्व दिया हैं। प्रकृति जो कि कलाकारों के लिए अनादि काल से रहस्य, रोमांच और सृजन का आधार रही है, जैसवाल भी इससे अछुते नहीं रहे हैं। इन्होंने अपने चित्रों और साहित्यिक रचनाओं में प्रकृति के ही

विविध रूपों और प्रभावों को अभिव्यक्त किया है। प्रकृति के प्रति उनका यह काव्यानुराग उनकी अतीत, अनमना, पुरवाई, वंदी, वियोगी, प्रतिक्षा आदि कृतियों में दिखाई देता है। उनका मानना है कि जब अंतर्मन में प्रतिबिम्बित संवेदनाएं रूप और रंग वरणकर के चित्रण तल पर उतरती है तो, वहीं चित्र में कविता होती है। एक आनंद की अभिव्यक्ति''[10]। श्री जैसवाल के चित्रों ने जहां राष्ट्रीय एवं अंर्तराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाई है। वहीं उनकी कई कविताएं एवं कहानियां भी देश की प्रतिष्ठित पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई है। 'अग्रह', असुरक्षित', समयदंश, विषजल, आदि कहानी संग्रह और विंव प्रतिविंव, कविता सग्रंह उनकी महत्वपूर्ण रचनाएं हैं।

उपरोक्त प्रमुख कलाकारों की तरह देश के कई और भी नए ऊर्जावान प्रतिभाशाली कलाकार माध्यम की सीमाओं से परे अपनी अभिव्यक्तियों को रचनात्मक रूप देने में प्रयासरत हैं। इससे ज्ञात होता है कि, कला एवं साहित्य का यह संबंध अपनी तात्विक समानता के कारण है और सदैव अपेक्षित है। कालखंड की सीमाओं से परे इसका एक लम्बा इतिहास भी दृष्टव्य है। युगो युगो से कलाकार एवं साहित्यकार इस संबंध की मधुरता को प्रगाढ़ करने हेतु प्रयासरत है, इसमें कभी साहित्य मुखर होता है तो कभी कला। दोनों सदैव एक दूसरे को प्रभावी एवं प्रेरित करते हुए रचनात्मक सृष्टि हेतु सृजनरत रहते हैं।

1. राजदान, अवतार कृष्ण, काशमिरी ललित कलाएं, उद्‌भव और विकास, दिल्ली 1973 पृ. सं. 83
2. रजा, मोजेग्राफ, गीता सेन, ल.क.अ. नई दिल्ली प्रकाशन पृ. सं. 3
3. समकालीन कला, अंक 2, ल.क.अ. नई दिल्ली प्रकाशन पृ. सं. 7

4. भारतीय समकालीन चित्रकला मे प्रतीकात्मक प्रवृत्तियॉ, शेधप्रबंध डॉ. शंकर शर्मा, पृ. सं. 183
5. समकालीन कला, अंक 15–16, ल.क.अ. नई दिल्ली प्रकाशन, पृ. सं. 14
6. समकालीन कला, अंक 15–16, ल.क.अ. नई दिल्ली प्रकाशन, भूमिका
7. भारतीय समकालीन चित्रकला में प्रतीकात्मक प्रवृत्तियाँ, शोध प्रबन्ध, डॉ. शंकर शर्मा, पृ.सं.
8. कलॉए आसपास, ल.क.अ. नई दिल्ली प्रकाशन, पृ.सं. 97
9. 'आभार' पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, उदयपुर एवं रा.ल.क. अकादमी, जयपुर 1998 पृ. सं. 99
10. 'आभार' पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, उदयपुर एवं रा.ल.क. अकादमी, जयपुर 1998 पृ. सं. 93